GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0964**

Classification:

Original File No:

Title

SECRETARY'S REPORT

Volume:

Running **from year:** **till year:**

Content:

- **Report by Secretary, H.Samad**

सैक्रेटरी का रिपोर्ट

जिसगार कलीशा के नये संशोधित नियमावली के अनुसार जब १ली नोवेम्बर १९६० को केन्द्रिय सलाहकारी सभा का संगठन हुआ तो उसके सामने दो प्रमुख प्रश्न आए। पहला तो कलीशा में नियमावली के आधार पर एकता एवं शांति को फिर से स्थापित करना और दूसरा के विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिये विभिन्न संस्थाओं को सुसंगठित करना। इन दोनों प्रश्नों को सुलझाने में के० एस० एस० को काफी मेहनत करना पड़ा।

एकता एवं शांति के लिये यह आवश्यक था और है कि विभाजित मंडलियां एक संगठन में नियमावली के अनुसार आ जाएं। इस कार्य के लिये के० एस० एस० को तथा अंचलों को कई बार कमिशन आदि बनाना पड़ा। के० एस० एस० को एक हाई पावर कमिशन तथा एक रिकान्सेलिएशन कमिशन बनाना पड़ा। जिसका काम विभाजित मंडलियों में एक संगठन बना कर शांति एवं एकता लाना था। फिर महासभा एवं एक्युमेनिकल कमिशन को कान्टिन्यूवेशन कमिटि ने भी परिश्रम किया। सफलता दूर तक मिली परन्तु अभी भी कई जगहों में मंडलियां विभाजित हैं जैसे उड़िसा के अंचल राजगांगपुर, रौरकेला, रटो बिरकेरा में, साऊथ ईस्ट अंचल के जमशेदपुर-समसेरा, गिनिकेरा।

नोर्थवेस्ट अंचल के लोहरदगा और डुबर्स में तथा खूटीटोली सिनद की कुछ मंडलियों में। अंचलों को अपने सरहद की मंडलियों में तथा खूटीटोली सिनद में सिनद संचालक और प्रमुख अध्यक्ष को एकता एवं शांति स्थापित करने का आदेश दिया गया है।

दूसरे प्रश्न अर्थात संस्थाओं को सुसंगठित करने के कार्य में कई एक प्रश्न उठते हैं। इनमें प्रमुख है आर्थिक व्यवस्था में कमजोरी, योग्य कार्यकर्ताओं की कमी, व्यवस्था एवं अधिकार की उपेक्षा। के० एस० एस० के अधीन ४ केन्द्रिय बोर्ड और कई एक कमिटियां हैं। अंचलों के अधीन भी कई एक कमिटियां हैं जो शासन एवं व्यवस्था के कार्य को अपने-अपने दायरे में करती हैं। शासन व्यवस्था को लेकर मंडलियों, पेरिस, इलाका, सिनद, अंचल और केन्द्रिय सलाहकारी सभा का संगठन है। इन सभी कमिटियों तथा सभाओं के कार्यों का सही सही मूल्यांकन (assessment) किया जाय तो उपरोक्त त्रुटियां मिलेंगी।

के० एस० एस० के स्तर में तथा अंचलों भी इनका प्रभाव विषम रूप से महसूस होने लगा है। इनका समाधान कैसे हो यह भी एक सिर दर्द है, फिर भी, अगर हम गोसनर कलीशा को वास्तव में स्वपालित, स्वशासित एवं प्रभावशाली देखना चाहते हैं तो अपनी उपरोक्त कमजोरियों तथा त्रुटियों को लेकर अधिक दिन नहीं चल सकते।

इस लिये कलीशा को एक ठोस नीति और एक प्रभावशाली शासन एवं व्यवस्था प्रणाली अपनानी होगी। अपनी आर्थिक नीति को बिलकुल पूर्णरूप से बदलना होगा, संस्थाओं के कार्यरूप में नयापन लाना होगा, अपने अधिकार पर अधिकतम जवाबदेहित्व को जानना-पहचानना होगा और योग्य व्यक्तियों को योग्यतानुसार काम में लगाना होगा। इन सब बातों को किसी न किसी रूप में गत वर्षों में हम सोचते बिचारते रहे पर अधिक दिन सोचने का अब समय नहीं है — अब ठोस कार्य करने का है।

हमारे सामने गोसनर मिशन ने एक प्रस्ताव रखा है जिसके साथ कुछ उत्तम सलाहें भी हैं जो हमारी कलीशा की सम्पूर्ण स्थिति से संबंध रखते हैं। गोसनर मिशन का यह विश्वास है कि अब उसे गोसनर कलीशा के अलावे अन्य किसी क्षेत्र में कार्य करना चाहिए। गोसनर कलीशा को, इसलिये, वास्तव में (नाम भर के लिये नहीं) स्वपालित हो जाना चाहिये। इस दृष्टिकोण से गोसनर कलीशा को अगले दस वर्षों तक (१९७४) ही गोसनर मिशन से आर्थिक सहायता प्राप्त हो सकती है। इस अवधि में गोसनर कलीशा को अपने पैरों पर खड़ा हो जाना चाहिए।

इस परिस्थिति से दो बातें निकलती हैं। —

पहली — अगले दस वर्षों में कलीशा को ऐसे आवश्यक कार्य करने हैं जिससे वह वास्तव में अपने पैरों पर खड़ा हो जाय ताकि रुपये-पैसों तथा कार्यकर्त्ताओं के लिये किसी का मुंह ताकना न पड़े। सभी कार्यक्रम — आर्थिक व्यवस्था, जयदाद, प्रचार, मसीही भंडारीपन, शिक्षा, आध्यात्मिक-शिक्षा, युवा-युवतियों एवं महिलाओं का कार्य आदि में उन्नति, योग्यता और प्रभाव लाना है।

दूसरी — गोसनर कलीशा और गोसनर मिशन के बीच नया संबंध स्थापित करना। इनके बीच का संबंध ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और बेटी-मां का रहता आया है। समय के साथ साथ इनका

संबंध "एकरारनामा" (Terms of Reference) पर आधारित हुआ जिनके शर्तों के अनुसार गोसनर मिशन से मिशनरी आते रहे हैं। अब नई परिस्थिति के अनुकूल इस "एकरारनामा" को भी बदलना आवश्यक होगया है। अब तो हमारे यहां जर्मनी के अलावे अन्य देशों, अन्य कलीसियाओं तथा संस्थाओं से भी विदेशी सहकर्मी आ रहे हैं और आयेंगे अतः इनके साथ संबंध रखने के लिये (विशेषकर सहकर्मी बुलाने-भेजने के संबंध) "एकरारनामा" को और भी विस्तृत करना होगा।

उपरोक्त दो बातों या विषयों पर के० एस० एस० ने सोच-विचार किया है और कर रही है। अगले दस वर्षों के आवश्यक कार्य करने के लिए (जो मौलिक विषय हैं) के० एस० एस० स्कीम तैयार कर रही है। किस प्रकार यह स्कीम लागू होगा इसकी नीति विशेष कैसी होगी। इन सभी बातों के अध्ययन के लिये एक कमिटि बनी है जो कलीशा के हर पहलू की आवश्यताओं एवं संभावनाओं को ध्यान में रख कर अपनी शिफारिस देगी। अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के निमित्त उचित परामर्श प्राप्त करने के हेतु के० एस० एस० ने गोसनर मिशन की सहायता से एक आर्थिक सलाहकार को लंदन से बुलाया है। आपका नाम श्री रोबर्ट [illegible] है जो लंदन लूथेरान मंडली के अंग हैं और एक अनुभवी व्यापारी भी। आशा है आप की सेवा से उचित दिशा में सहायता मिलेगी।

युवा-युवतियों के बीच कार्य की सहायता और परामर्श के लिये आस्ट्रेलिया से लूथेरान वर्ल्ड फेडरेसन की सहायता से पादी सी० जी० स्मिथ और उनकी मेमसाहिबा आई हुई हैं। आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने में सहायता के हेतु गोसनर मिशन थेओलोजिकल कालेज, प्रचारक ट्रेनिंग स्कूल और तबीता स्कूल में पढ़नेवालों के लिये छात्रवृति दे रही है।

इन सभी कार्यक्रमों को लेकर कलीशा को अगले दस वर्षों में अपनी आर्थिक हालत सुधारना है और ऐसे सुयोग्य कार्यकर्त्ता तैयार करना है जिससे विदेशी सहायता न मिलने पर भी कलीशा के सब कार्यक्रम सुचारुरूप से चलाए जा सकें।

विदेशी मिशन बोर्ड, विदेशी कलीशा एवं संस्थाओं से संबंध स्थापित करने के मामले में के० एस० एस० ने सही कदम उठाया है। गोसनर मिशन के प्रस्तावों को लेकर, जिसका जिक्र पहले हो चुका है, के० एस० एस० ने एक कमिटि बनाई जिसने अपना शिफारिस पेश किया है। इन शिफारिसों को के० एस० एस०

ने मूलतः ग्रहण किया है जो गोसनर मिशन को उसके अध्ययन एवं टिप्पणी के लिए दिया गया है। गोसनर कलीशा और गोसनर मिशन के इस वर्त्तालाप से लूथरान वर्ल्ड फेडरेसन तथा वर्ल्ड कौंसिल ऑफ चर्चेस के पदाधिकारी परिचित हैं और इस विषय को गंभीरता पूर्वक देख रहे हैं इसलिये कि सभी यह चाहते हैं कि हमारी कलीशा वास्तव में अपने पैरों पर खड़ी हो कर स्वपालित कलीशा बन जाय।

कलीशा के द्वारा जो उन्नति एवं विकास के काम हो रहे हैं इनका रिपोर्ट आप को विभिन्न केन्द्रिय बोर्डों द्वारा दिया जायगा इसलिए इनका जिक्र इस रिपोर्ट में नहीं रखा गया है। इस रिपोर्ट में संस्थाओं के या के० एस० एस० के छोटे मोटे कामों का विवरण न देकर उन्हीं बातों का जिक्र किया गया है जिनसे हम कलीशा के भविष्य कार्यों के विषय अधिक ठोस तरीके से बात-विचार कर सकते हैं। कलीशा संघ के सामने अपनी कलीशा के मौलिक त्रुटियों और कमजोरियों को रखते हुए आशा करते हैं कि यह संघ के० एस० एस० और पूरी कलीशा को उचित सलाह प्रदान करे।

इरन समद
सेक्रेटरी — जी० इ० एल० चर्च,
रांची।